प्रेस विज्ञप्ति

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान ने किया 'पूसा कृषि विज्ञान मेला 2026' का सफल आयोजन

नई दिल्ली, 27 फरवरी 2026: भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर–आईएआरआई), नई दिल्ली द्वारा 25 से 27 फरवरी 2026 तक आयोजित तीन दिवसीय *पूसा कृषि विज्ञान मेला 2026* का सफलतापूर्वक समापन हुआ। "**विकसित कृषि – आत्मनिर्भर भारत**" की थीम पर आधारित यह राष्ट्रीय स्तर का आयोजन देशभर से आए किसानों, वैज्ञानिकों, नीति-निर्माताओं, कृषि-उद्यमियों, एफपीओ, स्टार्टअप्स, महिला किसानों, ग्रामीण युवाओं एवं विद्यार्थियों के लिए कृषि नवाचार, संवाद और समाधान का सशक्त मंच सिद्ध हुआ।

मेले का भव्य शुभारंभ 25 फरवरी 2026 को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा किया गया। उद्घाटन अवसर पर डॉ. एम.एल. जाट, महानिदेशक, भा.कृ.अनु.परिषद एवं सचिव DARE, श्री देवेश चतुर्वेदी, सचिव कृषि एवं किसान कल्याण, डॉ. डी.के. यादव, उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) आईसीएआर, डॉ. सी. एच. श्रीनिवास राव, निदेशक आईसीएआर–आईएआरआई, डॉ रबीन्द्रनाथ पडारिया, संयुक्त निदेशक (प्रसार), आई ए आर आई तथा अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

माननीय मंत्री ने मेला परिसर में जीवंत प्रदर्शनियों—उन्नत एवं जलवायु-सहिष्णु फसल किस्मों, संरक्षित खेती, शहरी एवं परि-नगरीय कंटेनर गार्डनिंग, दलहन–तिलहन तथा डिजिटल एवं यंत्रीकृत कृषि प्रौद्योगिकियों का अवलोकन किया। उन्होंने पूसा कृषि विज्ञान मेले को *"किसानों का राष्ट्रीय महाकुंभ"* बताते हुए कहा कि यह केवल प्रदर्शनी नहीं, बल्कि प्रयोगशाला से खेत तक विज्ञान को पहुँचाने वाला एक जीवंत मंच है।

अपने संबोधन में श्री शिवराज सिंह चौहान ने किसानों को "अन्नदाता के साथ जीवनदाता" बताते हुए कहा कि भारत की कृषि प्रगति किसानों और वैज्ञानिकों की साझी उपलब्धि है। उन्होंने दलहन एवं तिलहन में आत्मनिर्भरता, पोषण सुरक्षा, प्राकृतिक एवं आधुनिक तकनीकों के संतुलित उपयोग तथा वैश्विक बाजारों के लिए गुणवत्ता-आधारित उत्पादन पर विशेष बल दिया। उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि सरकार द्वारा दी जा रही व्यापक उर्वरक सब्सिडी और किसान-केन्द्रित योजनाएँ कृषि को लाभकारी और टिकाऊ बनाने की दिशा में निर्णायक कदम हैं।

डॉ. एम.एल. जाट ने अपने संदेश में कहा कि आईसीएआर *"एक देश, एक कृषि, एक टीम"* की भावना के साथ मांग-आधारित अनुसंधान को प्राथमिकता दे रहा है, ताकि किसानों की वास्तविक जरूरतों के अनुरूप समाधान विकसित किए जा सकें। उन्होंने दलहन एवं तिलहन मिशन, प्राकृतिक खेती, मशीनीकरण और जलवायु-स्मार्ट कृषि को भविष्य की कृषि का आधार बताया।

निदेशक डॉ. सी. एच. श्रीनिवास राव ने स्वागत भाषण में कहा कि पूसा कृषि विज्ञान मेला किसान–वैज्ञानिक संवाद को सुदृढ़ करने का सशक्त माध्यम है, जिसमें देशभर से एक लाख से अधिक हितधारकों की सहभागिता इस बात का प्रमाण है कि किसान आज विज्ञान-आधारित समाधान अपनाने को तत्पर हैं।

मेले के दूसरे दिन तकनीकी सत्रों में फसल विविधीकरण, डिजिटल कृषि, एफपीओ–स्टार्टअप साझेदारी तथा कृषि विपणन एवं निर्यात जैसे समकालीन विषयों पर गहन चर्चा हुई। वैज्ञानिकों एवं विशेषज्ञों ने जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों के बीच उत्पादन, लाभप्रदता और स्थिरता बढ़ाने के लिए उन्नत किस्मों, डिजिटल परामर्श, सटीक कृषि और मूल्य संवर्धन की भूमिका पर प्रकाश डाला। किसानों की सक्रिय भागीदारी और प्रत्यक्ष संवाद ने इन सत्रों को अत्यंत व्यावहारिक और परिणामोन्मुख बनाया।

27 फरवरी 2026 को मेले का समापन *महिला एवं युवा उद्यमिता विकास* तथा *नवोन्मेषी किसान सम्मेलन* जैसे महत्वपूर्ण आयोजनों के साथ हुआ। महिला एवं युवा किसानों के लिए वर्टिकल फार्मिंग, हाइड्रोपोनिक्स, मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन, पुष्पोत्पादन, डेयरी, मूल्य संवर्धन एवं खाद्य प्रसंस्करण जैसे उद्यमों पर विशेष सत्र आयोजित किए गए, जिससे कृषि को रोजगारोन्मुख और आकर्षक बनाने का स्पष्ट संदेश मिला।

नवोन्मेषी किसान सम्मेलन में किसानों ने पूसा की प्रौद्योगिकियों को अपनाकर उत्पादन और आय में हुई वृद्धि के अनुभव साझा किए। समापन समारोह में देश के 25 राज्यों से आए किसानों को *आईएआरआई नवोन्मेषी कृषक*, *युवा नवोन्मेषी कृषक* तथा *अध्येता कृषक* पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जो किसान–वैज्ञानिक साझेदारी की जीवंत मिसाल बना।

समारोह में मुख्य अतिथि डॉ. आर. एस. परोदा, चेयरमैन टास एवं पूर्व महानिदेशक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने कहा कि कृषि अनुसंधान तभी सार्थक है जब वह खेत की वास्तविक परिस्थितियों में लागू हो और किसानों की आय बढ़ाने में सहायक बने। उन्होंने किसानों से वैज्ञानिक संस्थानों के मार्गदर्शन का अधिकतम लाभ उठाने का आह्वान किया।

निदेशक डॉ. सी. एच. श्रीनिवास राव ने बताया कि इस वर्ष मेले में स्टॉलों, भागीदार संस्थाओं और आगंतुकों की संख्या पूर्व वर्षों की तुलना में अधिक रही। फ्री मिट्टी–पानी परीक्षण, किसान परामर्श, एफपीओ एवं स्टार्टअप के लिए विशेष प्रदर्शन, उन्नत बीज एवं पौध सामग्री की उपलब्धता और सांस्कृतिक कार्यक्रम मेले के प्रमुख आकर्षण रहे।

मेले में भाग लेने वाले किसानों ने एक स्वर में कहा कि पूसा कृषि विज्ञान मेला उन्हें नई किस्मों, तकनीकों और बाज़ार से जुड़ने के अवसर प्रदान करता है। किसानों के अनुसार, वैज्ञानिकों से सीधा संवाद, जीवंत प्रदर्शन और सफल किसानों के अनुभव उनकी खेती को अधिक लाभकारी और टिकाऊ बनाने में अत्यंत सहायक सिद्ध हो रहे हैं।

पूसा कृषि विज्ञान मेला 2026 ने यह स्पष्ट किया कि विज्ञान-आधारित नवाचार, उद्यमिता और समावेशी दृष्टिकोण के माध्यम से भारतीय कृषि को आत्मनिर्भर, प्रतिस्पर्धी और टिकाऊ बनाया जा सकता है। यह मेला न केवल वर्तमान चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करता है, बल्कि *विकसित भारत* के संकल्प में कृषि की निर्णायक भूमिका को भी सुदृढ़ करता है।

Press Release

ICAR-IARI Successfully Organises ‘Pusa Krishi Vigyan Mela 2026’

New Delhi, 27 February 2026: The ICAR–Indian Agricultural Research Institute (ICAR–IARI), New Delhi, successfully concluded the three-day Pusa Krishi Vigyan Mela 2026**,** held from 25 to 27 February 2026. Organised under the theme *“Vikshit Krishi – Aatmanirbhar Bharat”*, the national-level event emerged as a strong platform for agricultural innovation, dialogue, and solutions, bringing together farmers, scientists, policymakers, agri-entrepreneurs, FPOs, startups, women farmers, rural youth, and students from across the country.

The Mela was ceremoniously inaugurated on 25 February 2026 by the Hon’ble Union Minister of Agriculture and Farmers’ Welfare, Shri Shivraj Singh Chouhan. The inaugural function was graced by Dr. M.L. Jat, Director General, ICAR and Secretary, DARE; Shri Devesh Chaturvedi, Secretary, Department of Agriculture and Farmers’ Welfare; Dr. D.K. Yadava, Deputy Director General (Crop Science), ICAR; Dr. Ch. Srinivasa Rao, Director, ICAR–IARI; Dr. RN Padaria, Joint Director (Extension), IARI; and other distinguished dignitaries.

The Hon’ble Minister visited the live demonstrations and exhibitions featuring improved and climate-resilient crop varieties, protected cultivation technologies, urban and peri-urban container gardening, pulses and oilseeds, as well as digital and mechanised agricultural technologies. Describing the Pusa Krishi Vigyan Mela as a *“national Kumbh of farmers,”* he stated that the event is not merely an exhibition, but a vibrant platform for taking science from the laboratory to farmers’ fields.

In his address, Shri Shivraj Singh Chouhan referred to farmers as not only *“Annadata”* (food providers) but also *“Jeevandata”* (life providers), and emphasized that India’s agricultural progress is a collective achievement of farmers and scientists. He underlined the importance of self-reliance in pulses and oilseeds, nutritional security, a balanced adoption of natural and modern technologies, and quality-based production for global markets. He also highlighted that extensive fertilizer subsidies and farmer-centric schemes of the Government are decisive steps towards making agriculture profitable and sustainable.

Dr. M.L. Jat stated that ICAR is prioritising demand-driven research with the spirit of *"One Nation, One Agriculture, One Team,"* to develop solutions aligned with farmers' real needs. He identified the Pulses and Oilseeds Missions, natural farming, mechanisation, and climate-smart agriculture as key pillars of future agriculture.

In his welcome address, Dr. Ch. Srinivasa Rao noted that the Pusa Krishi Vigyan Mela serves as a strong medium for strengthening farmer–scientist interaction. Participation of over one lakh stakeholders from across the country reflects farmers' growing readiness to adopt science-based solutions.

On the second day, technical sessions were held on contemporary themes such as crop diversification, digital agriculture, FPO–startup partnerships, and agricultural marketing and exports. Scientists and experts discussed the role of improved varieties, digital advisories, precision agriculture, and value addition in enhancing productivity, profitability, and sustainability amid climate change challenges. Active participation and direct interaction by farmers made these sessions highly practical and outcome-oriented.

The Mela concluded on 27 February 2026 with major programmes on Women and Youth Entrepreneurship Development and the Innovative Farmers' Conference. Special sessions were organised on vertical farming, hydroponics, mushroom cultivation, beekeeping, floriculture, dairy enterprises, value addition, and food processing, conveying a clear message of making agriculture employment-oriented and attractive for women and youth.

During the Innovative Farmers' Conference, farmers shared their experiences of adopting Pusa technologies and achieving higher productivity and income. At the valedictory function, farmers from 25 states were honoured with the IARI Innovative Farmer Award**,** Young Innovative Farmer Award**,** and **7** Fellow Farmer Award**,** showcasing the strength of farmer–scientist partnership.

The Chief Guest of the valedictory function, Dr. R.S. Paroda, Chairman TAAS and former Director General ICAR, emphasized that agricultural research becomes meaningful only when it is applicable under real field conditions and contributes to enhancing farmers' income. He urged farmers to make maximum use of the guidance and support of scientific institutions.

Dr. Ch. Srinivasa Rao stated that the number of stalls, participating organisations, and visitors was higher than in previous years. Free soil and water testing, farmer consultancy services, special exhibitions for FPOs and startups, availability of improved seeds and planting material, and cultural programmes were among the major attractions of the Mela.

Farmers participating in the event unanimously expressed that the Pusa Krishi Vigyan Mela provides them access to new crop varieties, technologies, and market linkages. According to them, direct interaction with scientists, live demonstrations, and sharing of experiences by successful farmers have been extremely helpful in making their farming more profitable and sustainable. The Pusa Krishi Vigyan Mela 2026 clearly demonstrated that science-based innovation, entrepreneurship, and an inclusive approach can make Indian agriculture self-reliant, competitive, and sustainable. The event not only addressed present challenges but also reinforced the decisive role of agriculture in realising the vision of a Viksit Bharat**.**

पूसा कृषि विज्ञान मेला

फसल सुधार
CROP IMPROVEMENT

रवींद्र पड़ारिया

25 - 27 फरवरी, 2026

पूसा कृषि विज्ञान मेला

25 - 27 फरवरी, 202
विकसित कृषि - आत्मनिर्भ

पूसा कृषि विज्ञान मेला

पूसा कृषि विज्ञान मेला
25 - 27 फरवरी, 2026

पूसा कृषि विज्ञान मेला